E-ISSN No : 2456-5040 | Volume : 11 | Special Issue | Aug 2026

अटल बिहारी वाजपेई का दार्शनिक चिंतन

डॉ. मीना कुमारी

गेस्ट फैकल्टी, दिल्ली विश्वविद्यालय

Access Online

Article DOI: 10.5281/zenodo.22745566

How to Cite: डॉ. मीना कुमारी (2026), अटल बिहारी वाजपेई का दार्शनिक चिंतन, International Educational Applied Scientific & Research Journal (IEASRJ), Vol: 11, Special Issue, Aug, 78-81

Research Paper

भारतीय दर्शन की अवधारणाः–

भारतीय दर्शन का आरंभ वेदों से होता है। वेद भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य आदि सभी के मूल स्त्रोत हैं। अनेक दर्शन–संप्रदाय वेदों को अपना आधार और प्रमाण मानते हैं। प्राचीन काल में इतने विशाल और समृद्ध साहित्य के विकास में हजारों वर्ष लगे होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं। उपलब्ध वैदिक साहित्य संपूर्ण वैदिक साहित्य का एक छोटा–सा अंश है। वैदिक साहित्य का विकास चार चरणों में हुआ है। ये संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद हैं।

वेद भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य आदि सभी के मूल स्त्रोत हैं। आधुनिक अर्थ में वेदों को हम दर्शन के ग्रंथ नहीं कह सकते। वे प्राचीन भारतवासियों के संगीतमय काव्य के संकलन है। उनमें उस समय के भारतीय जीवन के अनेक विषयों का समावेश है। वेदों के इन गीतों में अनेक प्रकार के दार्शनिक्क विचार भी मिलते हैं। चिंतन के इन्हीं बीजों से उत्तरकालीन दर्शनों की वनराजियाँ विकसित हुई हैं। अधिकांश भारतीय दर्शन वेदों को अपना आदि स्त्रोत मानते हैं। ये आस्तिक दर्शन कहलाते हैं। प्रसिद्ध षड्दर्शन इन्हीं के अंतर्गत हैं। जो दर्शन संप्रदाय अपने को वैदिक परंपरा से स्वतंत्र मानते हैं, वे भी कुछ सीमा तक वैदिक विचार धाराओं से प्रभावित हैं।

वेदों का रचना काल बहुत विवादग्रस्त है। प्राय–पश्चिमी विद्वानों ने ऋग्वेद का रचना काल 1500 ई. पू. से लेकर 2500 ई. पू. तक माना है। इसके विपरीत भारतीय विद्वान् ज्योतिष आदि के प्रमाणों द्वारा ऋग्वेद का समय 3000 ई. पू. से लेकर 7500 वर्ष ई. पू. तक मानते हैं। इतिहास की विदित गतियों के आधार पर इन प्राचीन रचनाओं के समय का अनुमान करना कठिन है। प्राचीन काल में इतने विशाल और समृद्ध साहित्य के विकास में हजारों वर्ष लगे होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। उपलब्ध वैदिक साहित्य संपूर्ण वैदिक साहित्य का एक छोटा–सा अंश है। प्राचीन युग में रचित समस्त साहित्य संकलित भी नहीं हो सका होगा और संकलित साहित्य का बहुत–सा भाग आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया होगा। वास्तविक वैदिक साहित्य का विस्तार इतना अधिक था कि उसके रचना काल की कल्पना करना कठिन है। निस्संदेह वह बहुत प्राचीन रहा होगा।

चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शनवादी कर्मकांड की अतिशयता को वैदिक परंपरा मानकर उससे दूर हट रहे थे। उन्होंने मानव समाज को लेकर जीवन की व्यावहारिक पक्ष की ओर ले जाने का प्रयास किया। चार्वाक दर्शन में सुखपूर्वक जीवनयापन करने पर बल दिया गया था –

"यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋऋणं कृत्वा घृतंपिवेत।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत–।।"[1]

जनता जनार्दन के लिए इस प्रकार के कथन इतने सुंदर थे कि यह दर्शन चार्वाक (चारु वाक् = चार्वाक) कहलाया। यह भौतिकवादी, प्रत्यक्षवादी, निरीश्वरवादी, यदृच्छावादी, स्वभाववादी तथा सुखवादी दर्शन है। यह पांच तत्त्वों में से आकाश को स्वीकार नहीं करता, केवल प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है। जीवन का लक्ष्य अधिकाधिक भौतिक सुख प्राप्त करना है। महाभारत युद्ध के उपरांत समाज कुछ ऐसी विचारधारा में फंस गया था कि मानवमात्र स्वयमेतर किसी पर विश्वास नहीं करना चाहता था। जैन तथा बौद्ध मत ने मानव समाज के आत्मविश्वास को पुष्ट कर उन्हें व्यावहारिक जीवन सुचारु रूप से जीने के लिए प्रेरित किया।

वेद एक संपूर्ण साहित्यः–

वेदों के संबंध में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि –" कुरआन और बाइबिल की भाँति वेद किसी एक ग्रंथ का नाम नहीं है और न वे किसी एक मनुष्य की रचनाएँ हैं। वेद एक संपूर्ण साहित्य है, जिसकी विशाल परंपरा है और जिसमें अनेक ग्रंथ सम्मिलित हैं। धार्मिक परंपरा में वेदों को नित्य, अपौरुषेय और ईश्वरीय माना जाता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हम उन्हें ऋषियों की रचना मान सकते हैं। वेद मंत्रों के रचने वाले ऋषि अनेक हैं।मंत्रों और स्तुतियों के संग्रह को संहिता कहते हैं।"[2] ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, ये सभी मंत्रों की संहिताएँ ही हैं। इनकी भी अनेक शाखाएँ हैं। इन संहिताओं के मंत्र यज्ञ के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए गाए जाते थे। आज भी धार्मिक और सांस्कृतिक कृत्यों के अवसर पर इनका गायन होता

Copyright© 2026, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

है। इन वेदमंत्रों में इंद्र, अग्नि, वरुण, सूर्य, सोम, उषा आदि देवताओं की संगीतमय स्तुतियाँ सुरक्षित हैं। यज्ञ और देवोपासना ही वैदिक धर्म का मूल रूप था। वेदों की भावना उत्तरकालीन दर्शनों के समान संन्यासप्रधन नहीं है। वेदमंत्रों में जीवन के प्रति आस्था तथा जीवन का उल्लास ओत प्रोत है। जगत् की असत्यता का वेदमंत्रों में आभास नहीं है। ऋवेद में मौलिक मूल्यों का पर्याप्त मान है। वैदिक ऋषि देवताओं से अन्न, धन, संतान, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विजय आदि की अभ्यर्थना करते हैं।

उपनिषद काल में एक तरफ बौद्ध और जैन धर्मों की अवैदिक परंपराओं का आविर्भाव हुआ तथा दूसरी तरफ वैदिक दर्शनों का जन्म हुआ था। उसके बाद गीता दर्शन भी इनका समकालीन है। सभीवैदिक दर्शनों ने कर्मयोग का महत्व स्वीकार किया है। व्यावहारिक होने के कारण उसे प्रतिनिधि भारतीय जीवन दर्शन कहा जा सकता है।

अटल जी का जन्म, बाल्यकाल और शिक्षाः–

उत्तरप्रदेश के आगरा जनपद के सुप्रसिद्ध प्राचीन स्थान बटेश्वर में एक वैदिक सनातन धर्मावलम्बी कान्यकुब्ज ब्राह्मण–परिवार रहता था। श्रीमद्भागवत गीता और रामायण इस परिवार की मणियाँ थीं। अटल जी के पितामह पं. श्यामलाल जी बटेश्वर में ही जीवनपर्यन्त रहे, किन्तु अपने पुत्र कृष्ण बिहारी को ग्वालियर में बसने की सलाह दी। ग्वालियर में अटल जी के पिताश्री पं. कृष्ण बिहारी जी अध्यापक बने। अध्यापन के साथ–साथ वे काव्य–रचना भी करते थे। उनकी कविताओं में राष्ट्र–प्रेम के स्वर भरे रहते थे। ''सोते हुए सिंह के मुख में हिरण कहीं घुस जाते''[3] प्रसिद्ध पंक्ति उन्हीं की है। वे उन दिनों ग्वालियर के प्रख्यात कवि थे। अपने अध्यापक–जीवन में उन्नति करते–करते वे विद्यालय–निरीक्षक के सम्मानित पद पर पहुँच गए। ग्वालियर राजदरबार में भी उनका मान–सम्मान था। अटल जी की माताजी का नाम श्रीमती कृष्णा देवी था। वे धार्मिक स्वभाव की गृहस्थ महिला थीं। वे रामायण पाठ और तुलसी–पूजन नित्य करती थीं ।

ग्वालियर में शिंदे की छावनी में 25 दिसम्बर सन् 1924 ई. को ब्राह्ममुहूर्त में अटल जी का जन्म हुआ था। उस दिन ईसा मसीह का जन्मदिन भी था। इसलिए गिरजाघर से तोपों के गोलों की आवाज आ रही थी। अटल जी का घर गिरजाघर के पास ही था। ऐसा कुछ भाषित हुआ कि मानो वे तोपें उनके जन्म के स्वागत में ही दग रही थीं। ढोलक–मँजीरे के साथ सोहर गाएगए। भभूका जैसा लाल सबको आकर्षित करने लगा। उस समय कौन जानता था कि पं. कृष्ण बिहारी का यह शिशु एक दिन भारतीय राजनीति का अप्रतिहत राष्ट्रनायक बनेगा ? पं. कृष्ण बिहारी जी के चार पुत्र अवध बिहारी, सदा बिहारी, प्रेम बिहारी ,अटल बिहारी तथा तीन पुत्रियाँ विमला, कमला, उर्मिला हुईं। परिवार भरा–पूरा था।

परिवार का विशुद्ध भारतीय वातावरण अटल जी की रग–रग में बचपन से ही रचने–बसने लगा। वे 'आर्य कुमार सभाश के सक्रिय कार्यकर्ता थे। परिवार 'संघ' के प्रति विशेष निष्ठावान था। परिणामतः अटल जी का झुकाव भी उसी ओर हुआ और वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन गए। वंशानुक्रम और वातावरण दोनों ने अटल जी को बाल्यावस्था से ही प्रखर राष्ट्रभक्त बना दिया। अध्ययन के प्रति उनमें उसी समय से प्रगाढ़ रुचि रही। अटल जी ने इस संबंध में लेखक को बताया– "मेरे बाबा संस्कृत के जाने–माने विद्वान् थे। गाँव के छोटे–से घर में संस्कृत की सैकड़ों पुस्तकें थीं । बाबा गाँवों में घूम–घूमकर श्रीमद्भागवत की कथा बाँचते थे। इसी से परिवार का भरण–पोषण होता था। साहित्य–प्रेम बाबा से मेरे पिता जी को मिला। वे हिन्दी के अच्छे कवि थे। ग्वालियर राज्य के वे सम्मानित कवियों में थे। ऐसे परिवार ने मुझमें साहित्य के बीज स्वतः डाल दिए। मैं बचपन से ही बाबा की पौथियाँ लेकर पढ़ा करता था। पिता जी की कविताओं को सुन–सुनकर मैं भी तुकबंदियाँ करने लगा। पिता जी के साथ कवि सम्मेलनों में भी जाया करता था। वह सवैया और घनाक्षरी का युग था। मैं भी समस्यापूर्तियाँ करने लगा। लोगों की प्रशंसा मिलती, उत्साह और बढ़ता।"[4]

अटल जी की बी.ए. तक की शिक्षा ग्वालियर में ही हुई। वहाँ के विक्टोरिया कॉलेज (अब लक्ष्मीबाई कॉलेज) से उन्होंने उच्च श्रेणी में बी.ए. उत्तीर्ण किया। वे विक्टोरिया कॉलेज के छात्र संघ के मंत्री और उपाध्यक्ष भी रहे। वादविवाद प्रतियोगिताओं में सदैव भाग लेते थे। इलाहाबाद विश्व–विद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के पं. अवध बिहारी वाजपेयी 87 वर्षों का जीवन जीकर फरवरी, 1998 को वैकुंठवासी हुए।

लिए उन्हें विक्टोरिया कॉलेज से भेजा गया। दूर का सफर, विलम्ब हो गया। जब म्योर हॉल में पहुंचे तो प्रतियोगिता समाप्त हो चुकी थी। निर्णायक मण्डलअपना निर्णय तैयार करने में व्यस्त था। सभी लोग निर्णय की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी धूल–घूसरित अटल जी मंच पर चढ़ गए और अध्यक्ष महोदय–कहकर क्षमायाचना करते हुए अपना भाषण प्रारम्भ कर दिया। भाषण में ऐसा सम्मोहन था कि सभी श्रोता मंत्रमुग्ध! निर्णायक मण्डल भी स्तम्भित भाव से भाषण सुनने लगा। हर दो मिनट बाद तालियों से अटल जी का स्वागत होने लगा। परिणाम यह हुआ कि उन्हें प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. हरिवंशराय बच्चन निर्णायक मण्डल के एक सदस्य थे। ग्वालियर से आप उत्तरप्रदेश की व्यावसायिक नगरी कानपुर के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र डी.ए.वी. कॉलेज में आए। राजनीतिशास्त्र से प्रथम श्रेणी में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एल–एल.बी. की पढ़ाई को बीच में ही विराम देकर संघ के काम में जुट गए।

पिता–पुत्र की कानून की पढ़ाई साथ–साथः–

अटल जी और उनके पिताश्री दोनों लोगों ने कानून की पढ़ाई में एक साथ प्रवेश लिया। हुआ यह कि जब अटल जी कानून पढ़ने डी.ए. वी. कॉलेज, कानपुर आना चाहते थे, तो उनके पिता जी ने कहा– "मैं भी तुम्हारे साथ कानून की पढ़ाई शुरू करूँगा।'' 5 वे तब राजकीय सेवा से निवृत्त हो चुके थे। अस्तु, पिता–पुत्र दोनों साथ–साथ कानपुर आए। उन दिनों कॉलेज के प्राचार्य श्रीयुत कालकाप्रसाद भटनागर थे। जब ये दोनों लोग उनके पास प्रवेश हेतु पहुँचे तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दोनों लोगों का प्रवेश एक ही सैक्शन में हो गया। जिस दिन अटल जी किसी कक्षा में न जाएँ, प्राध्यापक महोदय उनके पिता जी से पूछे– "आपके पुत्र कहाँ हैं ?"[6] खूब ठहाके लगें। जिस दिन पिता जी कक्षा में न जाएँ उस दिन अटल जी से वही प्रश्न– "आपके पिता जी कहाँ हैं ?"[7] फिर वही ठहाके! अटल जी को दूध

लेने जाना रहता था, इसलिए उन्हें प्रायः कक्षा में पहुँचने में विलम्ब हो जाता था। इस कारण उन्होंने अपना सैक्शनबदलवा लिया। छात्रावास में ये पिता–पुत्र दोनों साथ ही एक ही कमरे में छात्र–रूप में रहते थे। झुण्ड के झुण्ड लड़के इन्हें देखने आया करते थे।

संघ के प्रचारकः–

संघ के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में अटल जी अहर्निशि कार्य में लग गए। राष्ट्र और समाज को जीवन समर्पित करने वाले अटल जी ने अविवाहित रहकर राष्ट्र–सेवा–धर्म को स्वीकार किया। पं. दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के निकट संपर्क में रहकर अटल जी ने उनके निर्देशन में सकारात्मक राजनीति की शिक्षा ग्रहण की।

प्रथम जेल–यात्राः–

बचपन से ही अटल जी की सार्वजनिक कार्यों में विशेष रुचि थी। उन दिनों ग्वालियर रियासत दोहरी गुलामी में थी। राजतंत्र के प्रति जनमानस में आक्रोश था। सत्ता के विरुद्ध आन्दोलन चलते रहते थे। सन् 1942 में जब गांधीजी ने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा दिया तो ग्वालियर भी अगस्त क्रान्ति की लपटों में आ गया। छात्र वर्ग आन्दोलन की अगुवाई कर रहा था। अटल जी तो सबके आगे ही रहते थे। जब आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया तो पकड़–धकड़ होने लगी। कोतवाल, जो उनके पिताश्री कृष्ण बिहारी के परिचित थे, ने पिता जी को बताया कि आपके चिरंजीव कारागार जाने की तैयारी कर रहे हैं। पिता जी को अटल जी के कारागार की तो चिन्ता नहीं थी, किन्तु अपनी नौकरी जाने की चिन्ता जरूर थी। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र को अपने पैतृक गाँव बटेश्वर भेज दिया। वहाँ भी क्रान्ति की आग धधक रही थी। अटल जी के बड़े भाई श्री प्रेम बिहारी उन पर नजर रखने के लिए भेजे गए थेय किंतु वहाँ भी वे आंदोलन में कूद पड़े।

आखिर अटल जी पुलिस की लपेट में आ गए। उस समय वे नाबालिग थे। इसलिए उन्हें आगरा जेल की बच्चा–बैरक में रखा गया। चौबीस दिनों की अपनी इस जेल–यात्रा के संस्मरण वे हँस–हँसकर सुनाते हैं। बाद में धीरे वे प्रतिभाशाली साहित्यकार , प्रखर राष्ट्रवादी चिन्तक और संपादक के रूप में सारे देश में प्रसिद्ध हो गए। कई लोग उन्हें अपने पत्रों का संपादक बनाना चाहते थे, लेकिन अटलजी ने तो हिंदू, हिंदी, हिंदुस्तान के लिए अपना जीवन दान दे दिया था। वह भाषण देने में माहिर थे। जिनदिनों अटलजी 10 वीं कक्षा में पढ़ते थे उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कविता 'हिन्दू तन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय' लिखी थी। सन् 1942 में लखनऊ के कालीचरण कॉलेज में ओ. टी. सी. का कैम्प लगाया गया था। परमपूज्य गुरुजी के समक्ष जब उन्होंने अपनी यह कविता पढ़ी तो श्रोता बड़े प्रभावित हुए। जिस समय वे हवा में हाथ लहराते हुए, विशेष मुद्रा में, तेवर के साथ निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ रहे थे, तो सभी जन रोमांचित हो उठे थेः

''होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूँ जग को गुलाम ।
मैंने तो सदा सिखाया है करना अपने मन को गुलाम ।
गोपाल–राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किए ?
कब दुनिया को हिन्दू करने घर–घर में नरसंहार किए ?
कोई बतलाए काबुल में जाकर कितनी तोड़ीं मस्जिद ?
भू–भाग नहीं, शत–शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय ।
हिन्दू तन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय।'' [8]

बाद में उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रसिद्धि मिलने पर ई.1950 में 'दैनिक स्वदेश' के संपादक का भार फिर से संभाला, वीर अर्जुन' का संपादन किया वह अधिक चला। जनसंघ के संस्थापक सदस्य भी रहे उसके पश्चात राजनीति में प्रवेश किया 1980 वे चुनाव में जीत गए वे यायावर और यात्रा लोलुप रहे हैं। वेसादा जीवन व्यतीत करनेवाले उच्च विचारों से जुड़े हुए थे। पढ़ने और लिखने का उन्हें बहुत शौक है। थोड़ा–सा भी खाली समय मिलने पर वे कोई न कोई पुस्तक हाथ में उठा लेते हैं। पाकशास्त्र के तो वे पण्डित ही है। भोजन बनाने में उन्हें काफी रुचि हैय और हाँ, अपने हाथों से परोसकर खिलाने में बहुत प्रसन्न होते हैं। हिन्दी कवियों में महाप्राण निराला भोजन बनाने और खिलाने के लिए प्रसिद्ध थे।

अटल जी देश के महान् नेता हैं, किन्तु साहित्य–प्रेमियों को उनका कवि रूप भी बहुत प्रिय है। राजनीति में रहते हुए भी वे अजातशत्रु हैं।

उनकी प्रकाशित रचनाएँ–

1. मृत्यु या हत्या, 2. अमर बलिदान, 3. कैदी कविराय की कुण्डलियाँ,4. न्यू डाइमेन्सन ऑफ फॉरेन पॉलिसीज, 5. लोकसभा में अटल जी,6. संसद में तीन दशक, 7. अमर आग है, 8. मेरी इक्यावन कविताएँ,9. कुछ लेख, कुछ भाषण, 10. राजनीति की रपटीली राहें, 11. बिन्दु–बिन्दुविचार, 12. सेक्युलरवाद,

अटल जी के लेख और कविताएँ राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य, नइ कमल ज्योति, धर्मयुग, कादम्बिनी, नवनीत आदि में प्रकाशित हुए हैं।वे 16 मई 1996 भारत के प्रधानमंत्री बने उसके बाद पुनः 19 मार्च 1998 प्रधानमंत्री बने।

अटलजी का दार्शनिक चिन्तनः–

अटल बिहारी वाजपेयी के दार्शनिक विचार राष्ट्रवाद, उदार मानवतावाद, लोकतांत्रिक मूल्यों और सांस्कृतिक समन्वय पर आधारित थे ८ वह राजनीति को सत्ता का साधन नहीं, बल्कि जनसेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम मानते थे।

उनके दार्शनिक विचारों के मुख्य स्तंभ इस प्रकार है–

मानवतावाद और सह–अस्तित्वः उनका मानना था कि भारत कोई केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्था है, वह "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भारतीय परंपरा में अटूट विश्वास रखते थे और सभी धर्मों का समान सम्मान करने की वकालत करते थ।

राष्ट्र प्रथम और सुशासनः उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था. उनका दृष्टिकोण एक ऐसे भारत का निर्माण करना था जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से पूरी तरह मुक्त हो , वह एक समावेशी समाज के हिमायती थे।

लोकतांत्रिक मर्यादा और संवादः– वाजपेयी जी लोकतंत्र के प्रबल

समर्थक थेउनका मानना था कि –''पारस्परिक सहकारिता और त्याग की प्रवृत्ति को बल देकर ही मानव – समाज प्रगति और समृद्धि का पूरा – पूरा लाभ उठा सकता है।'' [9] उनके विचार ऐसे थे कि गरीबी दूर करने हमें दूसरे को यथासंभव देना भी चाहिए।–'' दरिद्रता का सर्वथा उन्मूलन कर हमें प्रत्येक व्यक्ति से उसकी क्षमता के अनुसार कार्य लेना चाहिए और उसकी आवश्यकता के अनुसार उसे देना चाहिए।"[10]

काव्यात्मक दर्शनः उनकी कविताओं में जीवन के यथार्थ, संघर्ष, आशा और करुणा का गहरा दर्शन झलकता है, कठिन परिस्थितियों में भी उनकी सोच सकारात्मक रहती थी और उनका प्रसिद्ध वाक्य ष्हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा"[11] उनके इसी अटूट दार्शनिकदृष्टिकोण को दर्शाता है।

संक्षेप में अटल जी राजनीति के क्षेत्र में अपने सिद्धांतों, विचारों, आदर्शों और मान्यताओं के प्रति अटल हैं। उन्हें कोई भी प्रलोभन डिगा नहीं सकता। और साहित्य के क्षेत्र में, वे इतनी व्यस्तताओं के बावजूद, विचरण करते रहते हैं। कभी कोई छंद लिख देते हैं, कभी कोई गीत टाँक देते हैं, कभी कोई लेख उकेर देते हैं। और भाषण तो नित्य देते ही रहते हैं। संसद के लिए या प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए वे अपने भाषण स्वयं ही तैयार करते हैं। उन्हें किसी दूसरे का लिखा हुआ भाषण रास ही नहीं आ सकता। उनका स्वयं का अध्ययन, विभिन्न क्षेत्रों में बहुत गहन और विस्तृत है। तो, अटल होने का मतलब है स्वयं अपने बलबूते लिखना, बोलना ।

अटल जी अपने आदर्शों और मूल्यों के प्रति सर्वदा अटल रहते हैं। वहाँ समझौते की गुंजाइश नहीं होती है। उनके सामने राष्ट्रहित सर्वोपरि होता है। जिन दिनों वे भारत के विदेशमंत्री थे, उन्होंने अपने बुद्धिबल से पाकिस्तान के मनोबल को धराशायी कर दिया। पाकिस्तान ने कश्मीर का नाम तक लेना बंद कर दिया था। उस पृष्ठभूमि में वह कश्मीर के प्रश्न को हमेशा के लिए हल करने को तैयार हो गया था। उनकी विदेश नीति की सफलता को विरोधियों ने भी स्वीकारा था और प्रशंसा की थी।

इस तरह इस लेख में मैंने अटल बिहारी वाजपेई के दार्शनिक सिद्धांतों की विवेचना करने का प्रयास किया हैं।

सन्दर्भ– सूचीः–

1. भारतीय ज्ञान परंपरा.विनोद माहेश्वरी.पृ.8
2. वही.पृ.9
3. बिंदु – बिंदु विचार .अटल बिहारी वाजपेई .पृ.226
4. वही .पृ.227
5. वही .पृ.228
6. वही
7. वही .पृ.231
8. वही .पृ.232
9. वही .पृ.36
10. कुछ लेख ,कुछ भाषण .अटल बिहारी वाजपेई .पृ.177
11. वही .पृ.37